ऊँटों में सर्रा रोग

ऊटों में पाये जाने वाले सर्रा रोग को तिबरसा व गलत्या नाम से भी जाना जाता है।

कारण

यह रोग रक्त परजीवी ट्रिपेनोसोमा इवान्साई से होता है।

रोग का फैलाव

मक्खियों और चमगादड़ों द्वारा रोगी पशु से स्वस्थ पशु में परजीवी का फैलाव होता है।

लक्षण

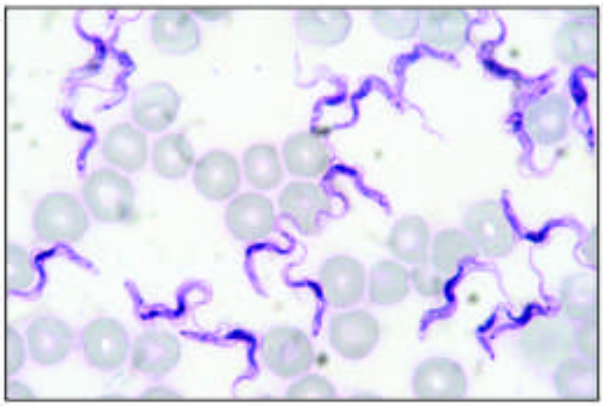

- ऊँट का कमजोर होना तथा जल्दी थकान होना
- आँखों की चमक फीकी होना
- कूबड़ (हम्प) का धीरे-धीरे खत्म होना
- गर्भित ऊँटनी में गर्भपात की सम्भावना
- नर ऊँट के पेट व अण्डकोश तथा मादा ऊँट की छाती में सूजन
- सांस में कठिनाई व नाक से स्त्राव आना
- असामान्य ज्वर यानि माह में तीन से चार बार तापमान का बढ़ना

बचाव व उपचार

- पशु मेलों तथा ऊँट बाहुल्य क्षेत्रों में सर्रा रोग नियंत्रण शिविरों का आयोजन
- रोगी पशुओं का नि:शुल्क उपचार
- संवेदनशील पशुओं का रोगनिरोधी उपचार
- नियमित रूप से कीटनाशक दवा का छिड़काव
- मक्खियों और चमगादड़ों से पशुओं का बचाव

पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग
स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पी.जी.आई.वी.ई.आर.)
(राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय)
एन.एच. 11, आगरा रोड़, जामडोली, जयपुर-302031